डॉ॰ अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कालेज, आरा

भारतेन्दु

प्रश्न : भारतेन्दु हरिश्चन्द्र को आधुनिक हिन्दी साहित्य का जनक माना जाता है। इस कथन की सत्यता पर विचार कीजिए।

उत्तर :

निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति के मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय के शूल॥

यह पद्यांश भारतेन्दु हरिश्चंद्र की है। वे हिन्दी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए हमेशा काम करते रहे। उनकी प्रेरणा से हिन्दी की उन्नति होती चली गयी। भारतेन्दु हिन्दी साहित्य में जागरण का संदेश लेकर आए थे। उन्होंने लिखा है — "जिन लोगों का ग्रामीणों से संबंध है, वे गाँव में ऐसी पुस्तकें भेजें, जहाँ कहीं ऐसे गीत सुनें, उसका अभिनंदन करें। इस हेतु ऐसे गीत साधारण भाषा में बनें, वरंच, गंवारी भाषा में भी स्त्रियों की भाषा में विशेष हो। कहानी, ठुमरी, खेमटा, कहरवा, लावनी, जाँते के गीत, बिरहा, चैनी, गजल इत्यादि ग्राम ~~गीतों~~ गीतों में उसका प्रचार हो। देश के सब भाषाओं में भी इसी के अनुसार प्रचार हो अर्थात पंजाब में पंजाबी, बिहार में बिहारी तथा बंगाल में बंगाली। ऐसे देशों में जिस भाषा का साधारण प्रचार हो, उसी भाषा में गीत बनें।"

भारतेन्दु का उद्देश्य जन साहित्य प्रस्तुत करना था। वह देश में एक नया जागरण लाना चाहते थे। उनकी इच्छा थी कि अशिक्षित लोग भी उनके गीतों को सुनें, कंठस्थ करें, गायें और फिर वे गीत सुधार का संदेश लेकर एक कोने से दूसरे कोने तक गूँज उठें। भारतेन्दु इस प्रतिक्रियावादी की समाधि पर जन साहित्य का निर्माण करना चाहते थे।

भारतेन्दु ने कविता ब्रजभाषा तथा खड़ी बोली में लिखी। उन्होंने ब्रजभाषा काव्य के क्षेत्र में सुधार किया। उन्होंने देखा कि बहुत से शब्द जिन्हें बोल-चाल से उठे कई वर्ष हो गए वे अब भी कविता

P. T. O

सवैयों में लाए जाते हैं। इससे कविता जन-साधारण से दूर हो गयी है। बहुत से शब्द तो अपभ्रंश और प्राकृत काल के चले आ रहे हैं, उन्होंने उन दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया।

नवीन धारा के बीच भारतेन्दु की वाणी सबसे ऊँची था। उन्होंने कविताओं में देश के अतीत गौरव गाथा का गर्व और वर्तमान अधोगति की क्षोभ भरी वेदना को भविष्य की भावना से जोड़ने की कोशिश की तत्कालीन भारत की अधोगति पर लिखी कविता का ध्यान आता है —

हाय! वहै भारत भुव भारी, सबहिं विधि सों भई दुखियारी।
हाय चित्तौर! निर्लज्ज तू भारी, अजहूँ रहे तू धरनि विराजत।

चित्तौर, पानीपत इन नामों में भारतवासियों की कितने भावों की व्यंजना हुयी है, इसे स्पष्ट: देखा जा सकता है। भारतेन्दु की कविता में राज-भक्ति और देश-भक्ति दोनों का मिला-जुला स्वर है —

अँग्रेज राज सुख-साज सब भारी।
पै धन विदेस चलि जात इहै अति ख्वारी॥

भारतेन्दु की रचनाओं में सबसे ऊँचा स्वर देश-भक्ति का है। उसी से लगे हुए विषय लोकहित, समाज-सुधार तथा मातृभाषा का उद्धार भी था। भारतेंदु के प्रयास से उनके इर्द-गिर्द लेखकों का एक मंडल तैयार हो गया था जिसे भारतेन्दु-मंडल कहा जाता था। इनमें हास्य-व्यंग्य तथा विनोद के निबंध भी पाये जाते हैं। इस काल की कविताओं में नए-नए आलंबन प्राप्त हुए जैसे, 'लकीर के फकीर' 'नए फैशन के गुलाम', 'मूर्ख और खुश', 'नाम या धर्म', 'भूखे देशभक्त' आदि। इसी प्रकार वीरता के आश्रय में जन्मभूमि के उद्धार के लिए रक्त बहाने वाले, अन्याय और अत्याचार का दमन करने वाले इतिहास प्रसिद्ध वीर होने लगे। सारांश यह कि उस कविता की धारा के भीतर नये-नए विषयों के प्रतिबिम्ब आए, वे अपनी नवीनता का आकर्षित करने के अतिरिक्त नूतन परिस्थितियों के साथ हमारे मनोविकारों को सामंजस्य भी किया।

P.T.O

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने अपने इतिहास ग्रंथ में लिखा है — "भारतेन्दु हरिश्चंद्र का प्रभाव भाषा और साहित्य दोनों पर बड़ा गहरा पड़ा। उन्होंने जिस प्रकार गद्य की भाषा को परिमार्जित कर उसे बहुत ही चलता, मधुर और स्वच्छंद रूप दिया उसी प्रकार हिन्दी साहित्य को नए मार्ग पर लाकर खड़ा कर दिया।"

इससे भी बड़ा काम उन्होंने यह किया कि साहित्य को एक नया मार्ग दिखाया। उसे वे शिक्षित जनता के साहचर्य में ले आए। नई शिक्षा से लोगों की विचारधारा बदल गयी। उनके मन में देशहित, समाजहित आदि की नयी उमंगें उत्पन्न हुईं। काल और गति के अनुसार उनके विचार और भाव तो बहुत आगे बढ़ गए।

आधुनिक गद्य साहित्य की परंपरा में भारतेंदु के नाटकों का बड़ा योगदान है। भारतेंदु से पहले नाटक के क्षेत्र में ब्रजभाषा में लिखे कुछ नाटक मिलते हैं जिसमें 'आनंद रघुनंदन' नामक नाटक का उल्लेख मिलता है। भारतेन्दु ने सबसे पहले 'विद्यासुंदर' नाटक का बंगला से हिन्दी में अनुवाद किया। उन्होंने अंग्रेजी, संस्कृत, बंगला आदि बोलियों नाटक देखकर 'नाटक' नाम से एक पुस्तक लिखी। इसमें यह विचार किया गया कि हिन्दी में कैसे नाटक लिखना चाहिए। उन्होंने लिखा कि नाटकों में पुनरावलोकन तथा नएपन का मेल होना चाहिए। उन्होंने कई संस्कृत नाटकों का हिन्दी में अनुवाद किया। अंग्रेजी के 'मर्चेंट ऑफ वेनिस' का 'दुर्लभ बंधु' नाम से अनुवाद किया। उन्होंने अनेक मौलिक नाटकों के भी सृजन किए जिनमें 'भारत दुर्दशा' 'नील देवी', 'सतीप्रथा', 'प्रेम योगिनी' और 'वैदिकी हिंसा-हिंसा न भवती' आदि हैं। उन्होंने अपने नाटकों के द्वारा देश की दशा और उसकी समस्याओं पर विचार किया। उनका नाटक पाखंडमय ~~[illegible]~~ धार्मिक और सामाजिक जीवन के बीच अपनी परिस्थिति का चित्रण है। भारतेन्दु

P. T. O

नाटकों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने सामग्री जीवन के ई क्षेत्रों से ली है। 'चंद्रावली' में प्रेम का आदर्श है तो 'भारत दुर्दशा' में देश की दशा का चित्रण है। 'प्रेम योगिनी' में धार्मिक और सामाजिक जीवन के प्रपंच पर प्रहार किया गया है।

भारतेन्दु ने पत्रकारिता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया। संवत् 1966 में 'कवि वचन सुधा' नामक पत्रिका का प्रकाशन शुरु किया जिसमें पुराने कवियों की कविता छपा करती थी, बाद में इसमें लेख भी आने लगे। संवत् 1973 में 'हरिश्चंद्र मैगजीन' नामक एक मासिक पत्र निकाला जिसका आठ अंकों के बाद 'हरिश्चंद्र चंद्रिका' नाम रखा गया। सुथरी हुई भाषा और परिमार्जित लेख इस पत्रिका की विशेषता थी। हिन्दी गद्य का उदय इसी समय से माना जा सकता है।

स्पष्ट है हिन्दी साहित्य के आधुनिक गद्य तथा अनेक विधाओं का जनक भारतेन्दु हरिश्चंद्र को ही माना जा सकता है। उन्होंने विधाओं का परिष्कार किया और उनको विविध दिशाओं में लगाया। हिन्दी गद्य का विकास उन्हीं के हाथों हुआ। हिंदी के सर्वप्रथम नाटककार वही माने जाते हैं। इस दृष्टि से भारतेन्दु हिन्दी साहित्य के जनक माने जाते हैं।

P.G. Semester II
CC - V
'Bhartendu Hindi Sahi[tya]
Ke Janak'